Syllabus and **Semester***Course Scheme*
Academic year 2023-24

B.A. – Sanskrit
Exam.-2023 - 2024

UNIVERSITY OF KOTA

MBS Marg, Swami Vivekanand Nagar,
Kota - 324 005, Rajasthan, India
Website: uok.ac.in

BACHELOR OF ARTS
SUBJECT - SANSKRIT
SCHEME OF SEMESTER EXAMINATION, 2023-2024
Course Code : SAN 5117 T

Credits : **06**Period per week- **06**
Each Theory Paper 3 hrs. duration 100 Marks
Internal Assessment 50 Marks
Total=150

Continuous Assessment Weightage					**External Assessment Weightage**	**Total Marks (Total Credit)**
Regular Students		**Private Students**		**Total**	Paper Based External Evaluation (End Tarm Examination)	
Mid-Term	Seminar/Project Report/Presentation	Report Writing	Viva-voce			
30	20	30	20	**50**	**100**	**150 (06)**

SemesterProgramme Structure (कार्यक्रम संरचना)

Year/ Semester	**Serial Number, Code & Nomenclature of Paper**			**Duration of Exam**	**Teaching Hrs/ Week & Credit**			**Distribution of Marks**			**Min. Pass Marks**	
	Number	Paper/ Code	Nomenclature		L	P	C	Internal Assess.	Sem. Assess.	Total Marks	Internal Assess.	Sem. Assess.
I Year/ I Semester	1.1	Paper-I SAN 101	कथा साहित्य, पद्य साहित्य, व्याकरण एवं अलंकार	3 Hrs	6	--	6	50	100	150	20	40
I Year/ II Semester	1.2	Paper-II SAN 102	नाटक, भारतीय संस्कृति के तत्त्व एवं व्याकरण	3 Hrs	6	--	6	50	100	150	20	40
	1.7& 1.8	Hin107/108 Eng107/108	Hindi/English	1.5 Hrs	2		2		50	50		20
II Year/ IIISemester	2.1	Paper-I SAN 201		3 Hrs	6	--	6	50	100	150	20	40
II Year/ IVSemester	2.2	Paper-II SAN 202		3 Hrs	6	--	6	50	100	150	20	40
	2.7& 2.8	Com207/208 Env207/208	Computer Application/ Environmental Science	1.5 Hrs	2		2		50	50		20
III Year/ V Semester	3.1	Paper-I SAN 301		3 Hrs	6	--	6	50	100	150	20	40
III Year/ VISemester	3.2	Paper-II SAN 302		3 Hrs	6	--	6	50	100	150	20	40
Total					**40**	**-**	**40**	**300**	**700**	**1000**		

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course Objective)

विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास को ध्यान में रखते हुए संस्कृत विषय का पाठ्यक्रम प्रारूप निर्मित किया गया है। संस्कृत भाषा की परिशुद्धि एवं परिमार्जन का ज्ञान करवाना तथा उसके शाश्वत सिद्धान्तों में कर्तव्यनिष्ठा, लोकादर्श, चरित्र निर्माण, समता, राष्ट्रीयता, अन्ताराष्ट्रिय ज्ञान–विज्ञान, प्रकृति पर्यावरण संरक्षण आदि विविध विषयों के माध्यम से मानव समाज का उपकार करना मुख्य ध्येय रखा है।

बी.ए.सेमेस्टर प्रथम
संस्कृत साहित्य
प्रश्न पत्र–कथा साहित्य, पद्य साहित्य, व्याकरण एवं अलंकार
Paper Code : SAN 101

समयः 3 घण्टे **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 40** **पूर्णांक–100**

नोटः–प्रश्न पत्र का निर्माण हिन्दी भाषा में किया जायेगा। इस प्रश्न पत्र को दो खण्डों में विभक्त किया गया है। जिसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है –

खण्ड अ

इस खण्ड में प्रत्येक इकाई से 02 लघु प्रश्न लेते हुए कुल 10 प्रश्न होगें। प्रत्येक लघु प्रश्न का उत्तर लगभग 20 शब्दों में हो। 10×2 =**20 अंक**

खण्ड ब

इस खण्ड में प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्न लेते हुए कुल 10 प्रश्न होंगे। प्रत्येक इकाई में से एक प्रश्न का चयन करते हुए कुल 5 प्रश्न हल करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 300 शब्दों में हो। 5×16 =**80 अंक**

इस प्रश्न पत्र का समस्त पाठ्यक्रम निम्न प्रकार से पाँच इकाईयों में विभाजित होगा –

इकाई 1. रघुवंशम् 'त्रयोदश सर्ग'
इकाई 2. हितोपदेश (मित्रलाभ)
इकाई 3. लघु–सिद्धान्त कौमुदी – संज्ञा एवं अच् सन्धि प्रकरणम् $(3\times2=6 + 4\times2.5=10)$ = 16 अंक
इकाई 4. अलंकार – काव्य दीपिका (अष्टम शिखा–भेदोपभेद रहित निम्नांकित अलंकार): अनुप्रास, यमक, श्लेष, स्वभावोक्ति, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रान्तिमान्, व्यतिरेक, अर्थान्तरन्यास, अतिशयोक्ति, विभावना, विशेषोक्ति, दृष्टान्त एवं समासोक्ति।
इकाई 5. सम्बन्धित प्रश्न (रघुवंशम् एवं हितोपदेश)

विशेष निर्देश –

खण्ड 'ब' प्रथम इकाई रघुवंशम् से दो श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या पूछी जाएगी। द्वितीय इकाई हितोपदेश से एक गद्य–एक पद्य की सप्रसंग व्याख्या पूछी जाएगी। तृतीय इकाई के दो भाग (अ) तीन सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या और (ब) चार पदों की सूत्रोल्लेखपूर्वक सिद्धि। चतुर्थ इकाई से चार में से दो अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण संस्कृत में देते हुए हिन्दी में स्पष्टीकरण देना है। पंचम् इकाई में (रघुवंशम् एवं हितोपदेश) से सम्बन्धित सामान्य प्रश्न प्रष्टव्य है।

आन्तरिक मूल्यांकन –शैक्षणिक अंश **50 अंक,** जिसका अंक विभाजन इस प्रकार है–
प्रोजेक्ट, असाइन्मेंट आदि कार्य–20 अंक
लिखित परीक्षा/ मौखिक परीक्षा–विषय आधारित **30 अंक**

सहायक ग्रंथ

1. रघुवंशमहाकाव्यम् (त्रयोदश सर्ग) – कालिदास – डॉ. श्रीकान्त पाण्डेय–साहित्य भण्डार, मेरठ
2. रघुवंशम् (मल्लिनाथ टीकासहित) – गोपाल रघुनाथ – मोतीलाल
3. रघुवंशम् महाकाव्यम – संस्कृत–हिन्दी व्याख्या सहित डा. जगन्नारायण पाण्डेय
4. रघुवंशम् (त्रयोदश सर्ग) – कालिदास –डॉ. बाबूराम त्रिपाठी
5. रघुवंशमहाकाव्यम् (त्रयोदशःसर्गः) – कालिदास – डॉ.रूपनारायण त्रिपाठी–आदर्श प्रकाशन जयपुर
6. हितोपदेश (मित्रलाभ) – हिन्दी अनुवाद – रामेश्वर भट्ट
7. हितोपदेश (मित्रलाभ) – डॉ. यशवन्त कुमार जोशी
8. हितोपदेश (मित्रलाभ) – डॉ. सुभाष तनेजा वेदालंकार
9. हितोपदेश (मित्रलाभ) –डॉ. बाबूराम त्रिपाठी
10. हितोपदेशमित्रलाभः–डॉ.रामदेव साहू –" श्याम प्रकाशन, जयपुर
11. हितोपदेश (मित्रलाभ)–डॉ.रूपनारायण त्रिपाठी –आदर्श प्रकाशन जयपुर
12. लघु सिद्धान्तकौमुदी(संज्ञा प्रकरण एवं अच् संन्धि प्रकरण) डॉ. पुष्कर दत्त शर्मा, अजमेरा बुक कम्पनी जयपुर
13. लघु सिद्धान्तकौमुदी (प्रथम वर्ष) डॉ. विश्वनाथ शर्मा – आदर्श प्रकाशन जयपुर
14. लघु सिद्धान्तकौमुदी (प्रथम वर्ष) डॉ. श्रीकृष्ण ओझा
15. लघु सिद्धान्तकौमुदी 'भैमी' व्याख्या– पं. भीमसेन शास्त्री (प्रथम भाग)
16. काव्य दीपिका (अष्टम शिखा) – कान्तिचन्द्र भट्टाचार्य
17. काव्य दीपिका (अष्टम शिखा) – डॉ. रामनारायण झा
18. काव्य दीपिका (अष्टम शिखा) – डॉ. यशवन्त कुमार जोशी
19. सद्वृत्तालंकार –डॉ. हिन्दकेसरी – पंचशील प्रकाशन, जयपुर

बी.ए. सेमेस्टर द्वितीय
संस्कृत साहित्य
द्वितीय प्रश्न पत्र –नाटक, भारतीय संस्कृति के तत्त्व एवं व्याकरण
Paper Code : SAN 102

समयः 3 घण्टे **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 40** **पूर्णांक–100**

नोटः–प्रश्न पत्र का निर्माण हिन्दी भाषा में किया जायेगा। इस प्रश्न पत्र को दो खण्डों में विभक्त किया गया है। जिसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है –

खण्ड अ

इस खण्ड में प्रत्येक इकाई से 02 लघु प्रश्न लेते हुए कुल 10 प्रश्न होगें। प्रत्येक लघु प्रश्न काउत्तर लगभग 20 शब्दों में हो।

10×2 =20 अंक

खण्ड ब

इस खण्ड में प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्न लेते हुए कुल 10 प्रश्न होंगे। प्रत्येक इकाईमें से एक प्रश्न का चयन करते हुए कुल 5 प्रश्न हल करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 300 शब्दों में हो। **5×16 =80 अंक**

इस प्रश्न पत्र का समस्त पाठ्यक्रम निम्न प्रकार से पाँच इकाईयों में विभाजित होगा –

इकाई 1. स्वप्नवासवदत्तम् (भासकृत)
इकाई 2. भारतीय संस्कृति के तत्त्व– पृष्ठभूमि, विशेषताएँ, वणाश्रम व्यवस्था, षोड़श संस्कार, पंच महायज्ञ, त्रिविध ऋण, प्राचीन भारत के प्रमुख शिक्षा केन्द्र, भारतीय संस्कृति का मानव कल्याण में योगदान।
इकाई 3. लघु–सिद्धान्त कौमुदी – हल् एवं विसर्ग सन्धि प्रकरणम् $(3\times2=6 + 4\times2.5=10) = 16$ अंक
इकाई 4. लघु–सिद्धान्त कौमुदी – अजन्त प्रकरण $(3\times2=6 + 4\times2.5=10) = 16$ अंक
(राम, हरि, लता, सर्व, ज्ञान तथा वारि शब्दों की रूपसिद्धि)
इकाई 5. सम्बन्धित प्रश्न (स्वप्नवासवदत्तम् एवं भारतीय संस्कृति के तत्त्व)

विशेष निर्देश–

खण्ड 'ब' प्रथम इकाई स्वप्नवासवदत्तम से दो पद्यों की सप्रसङ्ग हिन्दी व्याख्या पूछी जायेगी। द्वितीय इकाई से एक सामान्य प्रश्न प्रष्टव्य है। तृतीय एवं चतुर्थ इकाई में दो–दो भाग (अ) तीन–तीन सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या और (ब) चार–चार पदों की सूत्रोल्लेखपूर्वक रूपसिद्धि। पंचम् इकाई में (स्वप्नवासवदत्तम् एवं भारतीय संस्कृति के तत्त्व) से सम्बन्धित सामान्य प्रश्न प्रष्टव्य है।
आन्तरिक मूल्यांकन – शैक्षणिक अंश– 50 अंक, जिसका अंक विभाजन इस प्रकार है–
प्रोजेक्ट, असाइन्मेंट आदि कार्य–20 अंक
लिखित परीक्षा/ मौखिक परीक्षा – विषय आधारित **30 अंक**

सहायक ग्रन्थ

1. स्वप्नवासवदत्तम् – (संस्कृत हिन्दी व्याख्या) – जगन्नारायण पाण्डेय
2. स्वप्नवासवदत्तम् – डॉ. विश्वनाथ शर्मा– आदर्श प्रकाशन जयपुर
3. स्वप्नवासवदत्तम् – डॉ. यशवन्त कुमार जोशी
4. स्वप्नवासवदत्तम् – डॉ. मुरारी लाल अग्रवाल– साहित्य सरोवर प्रकाशन, आगरा
5. भारत की संस्कृति व साधना – डॉ. रामजी उपाध्याय।
6. भारतीय संस्कृति – प. शिवदत्त ज्ञानी।
7. भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व – डॉ. श्री कृष्ण ओझा– आदर्श प्रकाशन, जयपुर,
8.भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व – डॉ. विश्वनाथ शर्मा– आदर्श प्रकाशन जयपुर
9. भारतीय संस्कृति – डॉ. प्रीति प्रभा गोयल।
10. प्राचीन भारतीय संस्कृति के तत्व – डॉ. यशवन्त कुमार जोशी
11. लघु सिद्धान्त कौमुदी –(हल्सन्धि, विसग सन्धि एवं अजन्त प्रकरण) डॉ. पुष्कर दत्त शर्मा, अजमेरा बुक कम्पनी जयपुर
12.लघु सिद्धान्तकौमुदी 'भैमी' व्याख्या– पं. भीमसेन शास्त्री (प्रथम भाग)
13.लघु सिद्धान्तकौमुदी (प्रथम वर्ष) डॉ.विश्वनाथ शर्मा – आदर्श प्रकाशन, जयपुर

पाठ्यक्रम अधिगम से परिलाभ (Course Learning Outcome)

विद्यार्थी संस्कृत भाषा में निहित नैतिक मूल्यों को आत्मसात करके स्वपरिष्कार के साथ–साथ राष्ट्रीय विकास एवं प्रकृति संरक्षण को नई दिशा दे सकेग।